{ खुद के लिए जीने वाले की ओर कोई ध्यान नहीं देता पर जब आप दूसरों के लिए जीना सीख लेते हैं तो वे आपके लिए जीते हैं - परमहंस योगानंद }

सम्पादकीय

अमर्यादित-अनावश्यक बयान

आलोचना की भी अपनी मर्यादा

भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने जैसी कठोर भाषा का इस्तेमाल करते हुए सुप्रीम कोर्ट को निशाने पर लिया, उसकी कहीं कोई आवश्यकता नहीं थी। उन्होंने देश में चल रहे कथित गृह युद्धों के लिए सीधे-सीधे सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश को ही जिम्मेदार ठहरा दिया। समझना कठिन है कि वह किन गृह युद्धों की बात कर रहे हैं। इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि वर्तमान प्रधान न्यायाधीश का कार्यकाल छह माह का है और वह भी खत्म होने जा रहा है।

ऐसा लगता है कि निशिकांत दुबे वक्फ संशोधन कानून पर सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणियों से क्षुब्ध थे, लेकिन क्या उन्हें यह पता नहीं कि अभी इस मामले पर कोई फैसला नहीं आया है। संभवत: उन्होंने सुप्रीम कोर्ट पर निशाना साधने के पहले कुछ सोच-विचार करने की आवश्यकता नहीं समझी। इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती कि वह जरूरत से ज्यादा बोल गए और गलत तरीके से बोल गए। वह लगातार चौथी बार लोकसभा के सदस्य चुने गए हैं। वह वरिष्ठ सांसद ही नहीं हैं, उनकी गिनती भाजपा के प्रमुख नेताओं में होती है।

यह ठीक है कि वह अपने बेबाक बयानों के लिए जाने जाते हैं, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि कुछ भी बोल दें। लगता है कि उन्हें यह भी स्मरण नहीं रहा कि वह सत्तारूढ़ दल के सांसद हैं। उनका बयान कितना अधिक आपत्तिजनक था, इसे इससे समझा जा सकता है कि भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने उनके कथन से किनारा कर लिया और उसे उनका निजी वक्तव्य करार दिया, लेकिन इससे नुकसान की भरपाई होने वाली नहीं है। उन्होंने अपनी पार्टी और सरकार को तो असहज किया ही, विपक्ष को भी हमलावर होने का अवसर दे दिया।

ऐसा लगता है कि निशिकांत दुबे पर इसका कहीं कोई असर नहीं पड़ा कि भाजपा अध्यक्ष को उनके बयान को उनका निजी विचार ठहराना पड़ा, क्योंकि इसके बाद उन्होंने पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त को निशाने पर ले लिया। स्पष्ट है कि इसके लिए भी उन्हें आलोचना और निंदा का सामना करना पड़ रहा है। यह स्वाभाविक भी है। ऐसा नहीं है कि सुप्रीम कोर्ट की कार्यप्रणाली और उसके फैसलों की आलोचना नहीं हो सकती।

लोकतंत्र में कोई भी आलोचना से परे नहीं हो सकता और न होना चाहिए, लेकिन उसका एक तरीका होता है। उन्हें यह ध्यान रखना चाहिए था कि आलोचना की भी अपनी एक मर्यादा होती है। समस्या यह है कि भाजपा के कई नेता रह-रहकर इस मर्यादा का उल्लंघन करके पार्टी को संकट में डालने का काम करते हैं। निशिकांत दुबे ने जरूरत से ज्यादा बोलकर न्यायपालिका की कार्यप्रणाली को लेकर उठ रहे उन प्रश्नों की महत्ता कम करने का ही काम किया जिन पर गहन चर्चा की आवश्यकता है। यह प्रश्न न्यायपालिका में सुधार की आवश्यकता ही रेखांकित करते हैं।

विश्व पृथ्वी दिवस पर विशेष

हर व्यक्ति को लेना होगा 'पृथ्वी' के संरक्षण का संकल्प

विश्व पृथ्वी दिवस का बहुत महत्व है। यह एक ऐसा दिन है, जो हमें अपने आभामंडल से निकल कर पृथ्वी के बारे में सोचने और कुछ करने को विवश करता है। घटती हरियाली, सूखता पानी, पिघलते ग्लेशियर, बढ़ता तापमान इत्यादि विषयों की वास्तविकता से हम अवगत होते हैं। धरती की सुरक्षा के लिए प्रेरित करना और इसे एक कर्त्तव्य समझने का सन्देश हम पूरे विश्व में इस दिवस के माध्यम से देते हैं।

■ **प्रकाश चंद्र शर्मा**

करोड़ों वर्षों से अनसुलझे रहस्यों से भरे पड़े ब्रह्मांड में तैरते अनगिनत ग्रहों के बीच पृथ्वी ही एकमात्र ऐसा ग्रह है, जिस पर जीवन को किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। यहां जल, थल और नभ में विचरण करने वाले विभिन्न प्रजातियों के अनगिनत जीवों के साथ-साथ पृथ्वी की सतह को साधने वाली वनस्पति तो प्रचुर मात्रा में मौजूद है ही, पृथ्वी के गर्भ में भी जीवों का 'जीवन' कहलाने वाले 'जल' सहित मानव के उपभोग और उपयोग के लिए तेल, कोयला, सोना, चांदी, पत्थर तथा अन्यान्य धातुओं का अथाह भण्डार भरा पड़ा है। अनंत युगों से उत्खनन और दोहन होते चले आने के बावजूद आज भी पृथ्वी के गर्भ में मानव के उपभोग की वस्तुओं का असीमित भण्डार इस बात का संदेश देता है कि 'मां' कहलाने वाली 'पृथ्वी' के आंचल में अपनी संतानों को पालने, पोषणे और निरंतर वृद्धि की ओर अग्रसर करने के लिए आज भी उपयोग के भण्डार की कोई कमी नहीं है परन्तु इसका भावार्थ यह कतई नहीं है कि हम अविवेकी होकर अंधाधुंध दोहन करते चले जाएं। मानव द्वारा पृथ्वी की सतह और कोख में उपलब्ध संसाधनों के आंख मूंदकर किए गए दोहन का ही दुष्परिणाम था कि पर्यावरणविदों और वैज्ञानिकों को साठ के दशक में ही पृथ्वी के अस्तित्व पर छाए संकट को लेकर गहन चिंतन आरम्भ करना पड़ा था। बेशक इसकी शुरुआत अमेरिका से हुई लेकिन बाद में जुड़े जागरुकता के इस कारवां में विश्व के सारे देश न सिर्फ़ शामिल हुए बल्कि सभी ने एकराय होकर पृथ्वी के संरक्षण से जुड़े इस मसले पर सहमति की मुहर भी लगाई। अब वर्तमान प्रसंगों में मातृ विश्व पृथ्वी दिवस के भव्य आयोजन से इस पृथ्वी का भला होने वाला नहीं है। हमनें इस पृथ्वी का इस कदर दोहन किया है कि अब हर व्यक्ति को इसके संरक्षण के संकल्प लेने के साथ-साथ सरकार की नीतियों में सकारात्मक परिवर्तन की भी जरूरत है, तभी हम इस धरती माता के प्रति अपने मातृऋण से उऋण हो सकेंगे।

इसलिए शुरू हुआ 'विश्व पृथ्वी दिवस' : आज 22 अप्रैल है। यह तारीख पृथ्वी को समर्पित रहती है। हर साल इस दिन विश्व के सभी 192 देश विश्व पृथ्वी दिवस या अंग्रेजी में कहें तो 'वर्ल्ड अर्थ डे' मनाते हैं। तो चलिए जानते हैं 'वर्ल्ड अर्थ डे' मनाया जाना आरम्भ कैसे हुआ? बात शुरू होती है- 1960-70 के उस दशक से, जब पेड़ों की अंधाधुंध कटाई की जा रही थी। पूरे के पूरे जंगल साफ किए जा रहे थे। दुनिया का ध्यान इस तरफ आकर्षित करने और पृथ्वी के संरक्षण करने या बचाने के लिए सितम्बर 1969 में सिएटल, वाशिंगटन में एक सम्मलेन हुआ। इस सम्मलेन में विस्कोंसिन के अमेरिकी सीनेटर जेराल्ड नेल्सन ने यह घोषणा की कि 1970 की बसंत में पर्यावरण पर राष्ट्रव्यापी जन साधारण प्रदर्शन किया जाएगा। 1970 में हुए इस राष्ट्रव्यापी जन आंदोलन में अमेरिका में स्कूलों, कॉलेजों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इस आंदोलन में लगभग बीस हज़ार लोग शामिल हुए। पृथ्वी दिवस मनाना आरम्भ हो चुका था लेकिन वैज्ञानिकों के लिए या पर्यावरणविदों के लिए अभी भी बढ़ता प्रदूषण और पृथ्वी का बिगड़ता संतुलन

चिंता के विषय थे। सभी को चिंता थी कि अगर स्थिति ऐसी ही बिगड़ती रही तो जंगल, जमीन, जीव, जंतु सभी लुप्त हो जाएंगे। इसी विषय को ध्यान में रखते हुए 1992 में ब्राजील की राजधानी रिओ डे जेनेरिओ में एक सम्मलेन हुआ, जिसे अर्थ समिट, पृथ्वी सम्मेलन या रिओ समिट के नाम से जाना जाता है। इस सम्मेलन में 172 देशों के प्रतिनिधियों, हजारों स्वयंसेवी संगठनों और अनेक बहुराष्ट्रीय निगमों ने भाग लिया।इस सम्मेलन से पृथ्वी को विश्व राजनीति से एक ठोस आधार मिला। जिसके बाद एजेंडा-21 पारित किया गया, जो पृथ्वी के संरक्षण का मार्गदर्शक बना है। हर वर्ष 22 अप्रैल यानि विश्व पृथ्वी दिवस पर संयुक्त राष्ट्र और यूनेस्को द्वारा एक थीम जारी की जाती है, जिसके माध्यम से विश्व के सभी 192 देशों में यह विशेष दिवस मनाया जाता है। इस थीम के माध्यम से पृथ्वी के संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाना आसान हो जाता है। वर्ष 2020 में जब दुनिया कोरोना जैसे नए वायरस से लड़ रही थी, लॉक डाउन, क्वारंटीन, कॉन्सेंट्रेटर जैसे भारी-भारी शब्द पहली बार सुनने को मिल रहे थे, तब भी 'विश्व पृथ्वी दिवस' उल्लासपूर्वक मनाया जा रहा था। एक ऐसे जज़्बे के साथ कि जब यह महामारी समाप्त हो जाएगी तो हम इस पृथ्वी का पुनरुत्थान करेंगे और फिर से एक बेहतर दुनिया बनाएंगे। जैसी स्थिति पृथ्वी की होती है, वैसा ही जन का जीवन प्रभावित और हमारा स्वास्थ्य प्रभावित होता है।

सरकारी नीतियों में सकारात्मक बदलाव जरूरी : जैसा कि हमनें पहले ही कहा है कि सरकारी या गैर सरकारी तौर पर विश्व पृथ्वी दिवस के आयोजन से इस पृथ्वी का भला होने वाला नहीं है। इसके लिए पृथ्वी के संरक्षण और इसके विविध तत्वों में संतुलन बनाएं रखने की दृष्टि से लागू की गई नीतियों में सकारात्मक बदलाव किया जाना उचित होगा। सिर्फ इस पृथ्वी का दोहन करते हुए हम अपना हित तो साध लेते हैं परंतु उस दोहन से पृथ्वी के विविध तत्वों में हुए बदलाव और कमी का पुनर्भरण करने की बात आज तक न सोची गई। इस दिशा में सरकार को सोचना होगा और ऐसी नीति बनानी होगी जिससे पृथ्वी के संरक्षण, संवर्धन और इसके तत्वों में हुई कमी का पुनर्भरण हो सके। वृक्षों को काटकर जंगलों को खत्म करने, पानी के अंधाधुंध दोहन, औद्योगिकीकरण के रूप में विभिन्न प्रदूषणों की सौगात देने वाले मानव के पृथ्वी के प्रति अपने दायित्वों का बोध कराने के लिए नीतियों का निर्धारण किया जाना जरूरी है तभी इस पृथ्वी दिवस को मनाने और इससे उऋण होने की हमारी मंशा पूरी हो सकेगी।

विश्व पृथ्वी दिवस का बहुत महत्व है। यह एक ऐसा दिन है, जो हमें अपने आभामंडल से निकल कर पृथ्वी के बारे में सोचने और कुछ करने को विवश करता है। घटती हरियाली, सूखता पानी, पिघलते ग्लेशियर, बढ़ता तापमान इत्यादि विषयों की वास्तविकता से हम अवगत होते हैं।

धरती की सुरक्षा के लिए प्रेरित करना और इसे एक कर्त्तव्य समझने का सन्देश हम पूरे विश्व में इस दिवस के माध्यम से देते हैं। इस विश्व पृथ्वी दिवस को आप भी कुछ न कुछ ऐसा करें, जिससे पृथ्वी के, उसके संसाधनों के, उसके जीव जंतुओं के संरक्षण के लिए कुछ जागरूकता बढ़े।

देश/प्रदेश

कोटा फैक्ट्री के एनवी सर के छात्रों ने जेईई मैन्स में किया कमाल

मॉर्निंग न्यूज @ कोटा

शैक्षणिक उत्कृष्टता के एक उल्लेखनीय प्रदर्शन में, कोटा के असली जीतू भैया-एनवी सर (नितिन विजय) के नेतृत्व में मोशन एजुकेशन ने एक बार फिर प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में नए मानक स्थापित किए हैं। जेईई मेन 2025 के अब तक के परिणामों के आधार पर, मोशन एजुकेशन के 65.8 प्रतिशत छात्रों ने जेईई एडवांस्ड के लिए क्वालिफाई किया है, जो राष्ट्रीय औसत 16.25 प्रतिशत से काफी आगे है। मोशन ने साबित कर दिया है कि सामान्य छात्र भी सही मार्गदर्शन और संसाधनों के साथ भारत की सबसे कठिन परीक्षाओं जैसे आईआईटी-जेईई या नीट में सफलता पा सकता है।

इस अवसर पर मोशन एजुकेशन के संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी नितिन विजय ने कहा कि ऐसा कहा जाता है कि सफल होने के लिए टॉपर होना जरूरी नहीं, बल्कि सीखने की ललक, अनुशासन और हिम्मत होना चाहिए। हम मानते हैं कि हर छात्र में उज्ज्वल भविष्य की संभावना होती है। हम अपने छात्रों और शिक्षकों के इस

अद्भुत प्रदर्शन पर गर्व महसूस कर रहे हैं। सभी की मेहनत, अनुशासन और लगातार प्रयास वास्तव में प्रशंसनीय हैं। यह सफलता न केवल हमारी शैक्षणिक कठोरता को दर्शाती है, बल्कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भविष्य के नेताओं को तैयार करने के हमारे संकल्प को भी प्रदर्शित करती है। शैक्षणिक कठोरता से परे, मोशन एजुकेशन 'पहले छात्र, फिर परिणा" के सिद्धांत में दृढ़ विश्वास रखता है।

संस्थान एनवी सर द्वारा नियमित प्रेरणादायक सत्र, आंतरिक परामर्शदाताओं की सुविधा, तनाव प्रबंधन कार्यशालाओं और सहपाठी मार्गदर्शन कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों के मानसिक और भावनात्मक कल्याण को प्राथमिकता देता है। ये प्रयास एक सहयोगात्मक और संतुलित शिक्षण वातावरण बनाते हैं, जो छात्रों को उनकी तैयारी यात्रा के दौरान दृढ़, केंद्रित और आत्मविश्वासी बने रहने में सशक्त बनाता है।

इस शानदार प्रदर्शन में और योगदान देते हुए, 4 छात्रों ने टॉप 100 में, 17 ने टॉप 500 में, 39 ने टॉप 1000 में और 453 छात्रों ने ऑल इंडिया रैंक 10,000 के भीतर स्थान प्राप्त किए हैं, जो संस्थान की शैक्षणिक गुणवत्ता और व्यक्तिगत शिक्षण के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस वर्ष के प्रदर्शन को वास्तव में विशेष बनाता है मोशन एजुकेशन के विशेष कार्यक्रमों जैसे एकलव्य, आईएमएमपी, ए (30), और वी (110) बैचों से 100 प्रतिशत चयन दर।

शीतल जल प्याऊ का विधायक गोपाल शर्मा ने किया शुभारंभ

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर। सोडाला क्षेत्र के शनिदेव मंदिर पर सोमवार को प्रात: 10 बजे राम प्याऊ शीतल जल का शुभारंभ विधायक गोपाल शर्मा द्वारा किया गया। भीषण गर्मी में शीतल जल एक मानव जीवन की आवश्यकता एवं पुनीत कार्य है। इस अवसर पर श्याम नगर मंडल भाजपा उपाध्यक्ष मनोज खांडल, विमल शर्मा,

नीरज शर्मा, सावर गुर्जर, राजेंद्र शर्मा, विनोद शर्मा, अजय गुर्जर, रामू सैनी, लक्ष्मण सैनी, गिरिराज मेहरा, अजय सिंह, सतीश कुमावत, हेमंत कुमावत, रितिक शर्मा, धीरज पांडे, भागचंद प्रजापत, सोनू सैनी, श्याम सैनी, दीपक सैनी, अनिल सैनी, बिमल साहू, दिनेश कुमावत, सागर सैनी, राहुल शर्मा, प्रेमचंद प्रजापत, राम प्रजापत सहित सैकड़ों की संख्या में स्थानीय लोग और मित्रगण उपस्थित रहे।

दिल्ली-बठिण्डा और दिल्ली-हिसा ट्रेनों का भिवानी सिटी स्टेशन पर ठहराव

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर। रेलवे द्वारा दिल्ली-बठिण्डा-दिल्ली एवं नई दिल्ली-हिसार-नई दिल्ली रेलसेवा का संचालन वाया भिवानी बाईपास से होने के कारण इस रेलसेवा का भिवानी के स्थान पर भिवानी सिटी स्टेशन पर ठहराव की अवधि में विस्तार किया जा रहा है। जनसम्पर्क अधिकारी शशि किरण के अनुसार गाड़ी संख्या 14731, दिल्ली-बठिण्डा रेलसेवा जो दिल्ली से प्रस्थान करेगी वह परिवर्तित मार्ग भिवानी बाईपास होकर संचालित होगी तथा परिवर्तित मार्ग में यह रेलसेवा आगामी आदेशों तक भिवानी सिटी स्टेशन पर ठहराव करेगी। इसी प्रकार गाड़ी संख्या 14732, बठिण्डा-दिल्ली रेलसेवा जो बठिण्डा से प्रस्थान करेगी वह परिवर्तित मार्ग भिवानी बाईपास होकर संचालित होगी तथा परिवर्तित मार्ग में यह रेलसेवा आगामी आदेशों तक भिवानी सिटी स्टेशन पर ठहराव करेगी। गाड़ी संख्या 54423, नई दिल्ली-हिसार रेलसेवा जो नई दिल्ली से प्रस्थान करेगी वह परिवर्तित मार्ग भिवानी बाईपास होकर संचालित होगी तथा परिवर्तित मार्ग में यह रेलसेवा आगामी आदेशों तक भिवानी सिटी स्टेशन पर ठहराव करेगी। इसी प्रकार गाड़ी संख्या 54424, हिसार- नई दिल्ली रेलसेवा जो हिसार से प्रस्थान करेगी वह परिवर्तित मार्ग भिवानी बाईपास होकर संचालित होगी तथा परिवर्तित मार्ग में यह रेलसेवा आगामी आदेशों तक भिवानी सिटी स्टेशन पर ठहराव करेगी।

आईएनए सोलर ने मनाया 8 वर्षों की सोलर एक्सीलेंस का जश्न

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर

देश की टॉप 10 सोलर पैनल मैन्युफैक्चरिंग कंपनी आईएनए सोलर ने अपनी स्थापना के 8 गौरवशाली वर्षों का जश्न सनराइज़ ड्रीमवर्ल्ड रिसॉर्ट, जयपुर में धूमधाम से मनाया, जिसमें कंपनी के 800+ कर्मचारियों और उनके परिवारजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत वाटरपार्क में स्वागत एवं मनोरंजक गतिविधियों से हुई। विभिन्न खेलों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बाद पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया, जहां कर्मचारियों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर कंपनी के चेयरमैन मनीष गुप्ता एवं मैनेजिंग डायरेक्टर विकास जैन ने बताया कि आईएनए सोलर की स्थापना वर्ष 2017 में मात्र 80 मेगावाट पीवी मॉड्यूल निर्माण क्षमता के साथ हुई थी, लेकिन वर्ष 2025 तक आते-आते, कंपनी ने 4 गीगावाट मॉड्यूल निर्माण की ऊंचाई को छू लिया है। यही नहीं, कंपनी ने 2027 तक 8

गीगावाट पीवी मॉड्यूल, 3 गीगावाट सोलर सेल, और 54,000 एमटीए एल्युमिनियम फ्रेम उत्पादन क्षमता का लक्ष्य भी निर्धारित किया है। आईएनए सोलर का उद्देश्य भारत को सौर ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाना है। कंपनी ने स्पष्ट किया कि हम 'मेक-इन-इंडिया' के विज़न को एक नए स्तर तक ले जाने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 2030 तक निर्धारित 500 गीगावाट ग्रीन एनर्जी के लक्ष्य में आईएनए सोलर एक अहम भूमिका निभा रही है।

ग्रीष्मावकाश पर यात्रियों की सुविधा के लिए स्पेशल ट्रेनों का संचालन

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर

रेलवे द्वारा ग्रीष्मावकाश पर यात्रियों की सुविधा हेतु 02 जोड़ी स्पेशल रेलसेवाओं का संचालन किया जा रहा है। उत्तर पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी शशि किरण के अनुसार गाड़ी संख्या 06067, मदुरै-भगत की कोठी (जोधपुर) साप्ताहिक स्पेशल रेलसेवा 21.04.25 को (01 ट्रिप) मदुरै से सोमवार को 10.45 बजे रवाना होकर बुधवार को 12.30 बजे भगत की कोठी पहुंचेगी। इसी प्रकार गाड़ी संख्या 06068, भगत की कोठी (जोधपुर)-मदुरै साप्ताहिक स्पेशल रेलसेवा 24.04.25 को (01 ट्रिप) भगत की कोठी से गुरुवार को 05.30 बजे रवाना होकर शनिवार को 08.30 बजे मदुरै पहुंचेगी। यह रेलसेवा मार्ग में दिंडुक्कल जं., तिरूच्चिराप्पल्लि, वृद्धाचलम जं., विलुप्पुरम जं., चेंगलपट्टू जं., ताम्बरम्, चैन्नई, सूलूरूपेटा, गुडूर, नेल्लूर, औंगोल, विजयवाडा, खम्मम, वरंगल, बल्लारशाह, चन्द्रपुर, वर्धा, धामनगांव, बडनेरा, अकोला, मलकापुर, भुसावल, जलगांव, नंदुरबार, उधना, अंकलेश्वर, वडोदरा, आणंद, साबरमती, महेसाना, पाटन, भीलडी,रानीवाडा, मारवाड भीनवाल, मोदरान, जालोर, मोकलसर, समदडी व लूनी स्टेशनों पर ठहराव करेगी। इस रेलसेवा में 06 थर्ड एसी इकोनोमी, 12 थर्ड एसी व 02 पॉवरकार डिब्बों सहित कुल 20 डिब्बे होंगे।

गाड़ी संख्या 06057, चैन्नई-भगत की कोठी (जोधपुर) साप्ताहिक सुपरफास्ट स्पेशल रेलसेवा 20.04.25 को (01 ट्रिप) चैन्नई से रविवार को 19.45 बजे रवाना होकर मंगलवार को 12.30 बजे भगत की कोठी पहुंचेगी। इसी प्रकार गाड़ी संख्या 06058, भगत की कोठी (जोधपुर)- चैन्नई साप्ताहिक सुपरफास्ट स्पेशल रेलसेवा 23.04.25 को (01 ट्रिप) भगत की कोठी से बुधवार को 05.30 बजे रवाना होकर गुरुवार को 23.15 बजे चैन्नई पहुंचेगी।